Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

वैदिक ज्योति

वर्ष 5 सितम्बर 2004

आर्य सेवा संघ, महू

योगीराज भगवान श्रीकृष्ण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया गया कर्म बन्धन में नहीं डालता है।

यज्ञोदानं तपश्चैव पावनानी मनीषिणाम् गीता 18/5

यज्ञ, दान और तप मनुष्य जीवन को पवित्र करते है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी पंच महायज्ञ प्रत्येक को करने का उपदेश दिया तथा देव यज्ञ (हवन) भी हर व्यक्ति को नित्य करना का उपदेश दिया है। क्योकि पुन: योगीराज कहते है –

सह यज्ञ: प्रजा: सृष्टवा पुरोवाचा प्रजापति: ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोस्विस्टकामधुक ॥ गीता 3/10

परमात्मा ने भी प्राचीन काल में प्राणियों को यह भावना से उत्पन्न किया और मानव को उपदेश दिया कि तुम यज्ञ भावना से ही सांसारिक सूत्र को चलाओं यज्ञ की भावना वाला कर्म तुम्हारी सब इच्छाओं की पूर्ति करेगा।

यज्ञ को महत्व देते हुए भगवान कृष्ण कहते है

नायं लोकोऽस्त्यज्ञस्य कुतोऽन्य कुरू सत्तम गीता 4/31

हे अर्जुन जो यज्ञ नहीं करता उसको यह लोक प्राप्त नहीं होता तो परलोक क्या प्राप्त होगा। क्योंकि –

तस्मात् सर्वगतं ब्रह्म यज्ञेसर्वं प्रतिष्ठितम् गीता 3/15

अर्थ – ब्रह्म सर्वव्यापक है किन्तु यज्ञ में साक्षात् उपस्थित है।

इस प्रकार भगवान कृष्ण को मन से हम मानते है उनकी सच्ची पूजा करते है तो उनके बताए मार्ग पर चलना ही सच्ची भक्ति है और पूजा है आर्य समाज वैदिक सिध्दातों को मानता है भगवान कृष्ण का पूर्ण जीवन वैदिक था इस कारण भगवान कृष्ण का दिया हुआ उपदेश आर्य समाज की कार्यशैली में शत् प्रतिशत् उपलब्ध है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जरा सोचें

योगीराज कृष्ण क्या कहते हैं ?

प्रकाश आर्य, महू

अर्जुन को उपदेश देते हुए बताया –

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन मामनुस्मरन ।
यः प्रयाति त्यजन् देहं सयाति परमां गतिम् ॥ गीता 8/13

उस ब्रह्म परमात्मा ओ३म् का स्मरण कर वहीं परमगति को प्रदान करने वाला है, अर्थात् परमात्मा का स्मरण ओ३म् नाम से करना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ओ३म् परमात्मा का मुख्य नाम है हमें बताया।

ईश्वर सर्व भूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन् सर्व भूतानि यन्त्र रूढानि मायया ॥

अर्थात् ईश्वर को इधर–उधर ढूढंना अज्ञानता है उसका वास तो हमारा हृदय है।

यज्ञशिष्ट शिनः सन्तः मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः । गीता 3/13
भुंजन्ते ते त्वघं पापा ये पच्यन्त्यात्मकारणात् ॥

अर्थात् परमात्मा को त्यागकर जो अपने स्वार्थ के लिए दिन रात भाग– दौड़ उद्यम करते है दूसरों के कल्याण व उपकार की भावना जिनमें बिलकुल नहीं होती है ऐसे व्यक्ति पापी है मानों पाप को खाते है (यहां यज्ञ का अर्थ परमार्थ श्रेष्ठ कर्म से समझे) महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी इस विचार को आर्य समाज के 9 वें नियम में उल्लेखित किया और बताया प्रत्येक को अपनी उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहियें।

यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मवन्धन ।
तदर्थ कार्य कौन्तेय मुक्त संगः समाचार ॥

यह संसार कर्म में ,वन्धन में डालने वाला है किन्तु यज्ञ भावना से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीता ? जिसने मन पर विजय पा ली। छान्दोग्य उपनिषद् प्रपाठक 7 खण्ड 3 के आदि ही में यह कहा गया हैं – मनो ह्यात्मा मनो हि ब्रह्म मन उपास्स्वेति " मन निस्सन्देह आत्मा हैं, अर्थात मन ही लोक तथा ब्रह्म की प्राप्ति का साधन हैं। लोक – परलोक दोनो मन ही से सिध्द होते हैं " ऋग्वेद के पाँचवें मण्डल में एक सुन्दर मन्त्र हैं जिसमें यह आदेश किया हैं कि –

स्थिरं मनश्चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको युधये भूयसश्चित्।

(ऋ. 5-30-4)

' हे ईश्वर की इच्छा करनेवाले। यदि तू समर्थ होकर मन को स्थिर करे तो तू अकेला ही बहुतों को भी युध्द के लिए जीत सकता हैं – पर्याप्त है।'

मन की इतनी बड़ी महिमा है। चाहे इस लोक का अभ्युदय प्राप्त करना हो, चाहे ब्रह्मलोक में पहुँचना हो, दोनो के लिए मन का स्थिर करना अनिवार्य हैं।

इसके साथ यह सदा सम्मुख रखिये कि मन और शुक्र अर्थात वीर्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। ' हठयोग–प्रदीपिका' में एक बड़ा मार्मिक श्लोक आता हैं।

चित्तायत्तं नृणां शुक्रं, शुक्रायत्तं च जीवितम्।
तस्माच्छु क्रं मनश्चैव रक्षाणीयं प्रयत्नतः॥

" मनुष्यों का शुक्र (वीर्य) चित्त के अधीन है अर्थात् चित्त के चलायमान होने पर वीर्य भी चलायमान हो जाता है,इससे शुक्र मन के वशीभूत है, और मन्ष्यों का जीवन शुक्र के अधीन है अर्थात् शुक्र की स्थिरता से जीवनश औंर शुक्र की नष्टता से मरण होता है, इसलिए जीवन शुक्र के अधीन है। इसलिए यह आवश्यक है कि शुक्र और मन की भली प्रकार यत्न से रक्षा करे। " इसका प्रयोजन यही है कि यदि जीवन की कामना है तो मन को स्थिर रखने का प्रयत्न करो।

ऐसा है वह मन जो प्रभु–मन्दिर में वास करता है। जब तक इसको अपना साथी अथवा मित्र बना लिया जाए, तब तक यह बाधक बनकर हमें तंग करता रहेगा और प्रभु–मन्दिर में पहुँचकर भी प्रभु–दर्शन से वंचित रक्खेगा। गंगा में खड़े होकर भी जलपान नहीं करने पायेंगे,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन की बात

भगवान के मन्दिर में प्रत्येक इन्द्रिय और प्रत्येक नाड़ी काम आने वाली हैं। नाड़ियों व्दारा ही उपासना करनी होती हैं। परन्तु इन सब में सर्वोपरि मन है और सच पूछिये तो यह मन की कृपा है कि हम इस शरीर में बैठे है। प्रश्न–उपनिषद् में तीसरा प्रश्न यही है कि यह शरीर में कैसे आता हैं ? इसका उत्तर उपनिषद् ने यह दिया हैं –

मनोऽधिकृतेनायात्यस्मिंछरीरे।

अर्थात् मन के काम से यह शरीर में आता हैं – जो मन से शुभ–अशुभ संकल्प किये जाते हैं, उनके कारण से शरीर में आता हैं। महाभारत में भी यही कहा है –

मन एव मनुष्याणां करणं बन्धमोक्षयो:।

''मन ही मनुष्य के बन्धन का औंर मन ही मनुष्य के मोक्ष का कारण हैं।'' वेद भगवान ने तो सबसे पहले यह आदेश किया है कि मन के बिना कोई भी काम नहीं किया जा सकता –

यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु॥

(यजु. 34–3)

1. उपासना नाड़ियो ही के व्दारा धारण करनी होती हैं। सित इड़ा और असित पिंगला – ये दोनो जहाँ मिल जाती हैं, उसको सुषुम्णा कहते हैं। उसमें योगाभ्यास से स्नान करके जीव शुध्द हो जाता हैं।

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)

यही हैं वास्तव में कुन्जी सव कर्मो की। यदि यह हाथ में आ जाए तो सब तो सव–कुछ मिल जाता हैं। निस्सन्देह, परमात्मा तक मन की भी पहुँच नहीं, परन्तु यह एक प्रमाणित सत्य हैं कि प्रभु – निवास के व्दार तक पहुंचा भी यही सकता हैं। इसकी शक्ति वहुत वड़ी हैं और श्री शंकराचार्य जी ने तो इसकी महिमा और भी वढा दी है।

किसी ने प्रश्न पूछा --'' जितं जगत् केन ? ''

उन्होंने उत्तर दिया– '' मनो हि येन ''। अर्थात् संसार को किसने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सनातन धर्म बनाम वैदिक धर्म

पं. रामलाल शास्त्री विद्यभारसकर

आज समाज में धर्म के संबंध में अनेक भ्रांतियाँ है भ्रांति का कारण अनेक धर्म मान्यता। जब से हमने धर्म मानना प्रांरभ किया तभी से समाज में विघटन प्रांरभ हो गया। धर्म में सच्चे व व्यापक स्वरूप को न समय पाने में कारण हम धर्म में वास्तविक रूप से परिक्षिप्त नहीं है। अनेक छोटी सी मान्यताओं को जो धर्म का एक छोटा सा अंश था उसे ही हम पूर्ण धर्म समझने लगते है औंर मानवता समाज में अन्धकविश्वास तथा विघटन का बीजारोपण हो गया।

सनातन धर्म ही धर्म है सनातन का अर्थ है न जिसका आदि हो न अन्त धर्म शासवत है सह से और सदा रहेगा।

सदा से जो है। वह वैंदिक ज्ञान ही है जो श्रृष्टि की रचना के पश्चात परमात्मा ने इस मनुष्य को दिया। इसीलिए इसे सत्य सनातर्न वैदिक धर्म कहते है।

परमात्मा का पूर्ण है इसलिए उसका ज्ञान भी पूर्ण है। वेद परमात्मा का ज्ञान है इसलिए सब सत्य विद्याओं का भण्डार हैं। वेद धर्म का आधार है –

वेदोऽ खिलो धर्म मूलम्

वेद के लक्षण बताए उसमें सर्वप्रथम वेद है।

वेदः स्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः
एतच्चतुविधं प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्

इसलिए कहा – सा प्रथमा संस्कृति विश्वस्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्यासे-के-प्यासे ही रह जायेगें। इसलिए सबसे पहले मन की ओर ध्यान देना नितान्त आवश्यक है। एक उर्दू कवि ने भी कहा है -

'बड़ी नायाब' शै है यह दिले-बेताब सीने में।
हजारों .कीमती लालो-गुहर हैं इस द.फी ने में॥

और एक दुसरे कवि को तो 'दिल' ही भगवान् का निवास-स्थान दिखाई दिया। वह कहता हैं :-

खानये -दिल में मिले वो जलवागर।
दर-बदर भटका किये जिसके लिए॥

तो इसकी ओर से नेत्र बन्द नहीं किये जा सकते, अपितु पहले इसी की शरण लेनी पड़ती है। यदि मन हाथ में आ गया तो फिर प्रभु के दरबार में बेखटके पहुँचा जा सकता है। यह कार्य कहने को तो सरल है, किन्तु करने को अत्यन्त कठिन है गीता में अर्जुन भी तो सहम पुकार उठा था - " हे महाराज, यह मन बड़ा चंचल और प्रमथन स्वभाववाला है तथा बहुत दृढ और बलवान है। इसलिए इसको वश में करना में वायु की भाँति दुष्कर मानता हूँ।" और कृष्ण भगवान ने भी यह कहा है कि निस्सन्देह मन बड़ा चंचल और कठिनता से वश में होनेवाला है, किन्तु धैर्य देकर यह भी कहा कि अभ्यास और वैराग्य से यह वश में किया जा सकता है।

क्रमश: .....

मन को वश में करने के तीन साधन .....कृपया अगामी अंक में पढ़े

थोड़ा हंसिये भी

पार्टी में सभी कुर्सियाँ भरी हुई थी। एक मोटी महिला से जब खड़ी रहना मुश्किल हो गया, तो उसने कुर्सी पर बैठे 8 वर्षीय राजू से कहा बेटा तुम्हारी कुर्सी पर हम फिफ्टी-फिफ्टी बैठे ?

राजू ने मोटी महिला को घूरते हुए कहा, आंटी फिफ्टी-फिफ्टी नहीं, एट्टी ट्वेन्टी बैठना होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी दयानन्द के अमृत वचन

तीर्थ :- जितने विद्याभ्यास, सुविचार, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान, सत्य का संग , ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियतादि उत्तम कर्म हैं , वे सब तीर्थ कहाते हैं क्योकि इन कर्मों को करने से जीव दु:खसागर से तर सकता है।

स्तुति :- जो ईश्वर वा किसी दूसरे पदार्थ के गुणगान, कथन, श्रवण और सत्यभाषण करना हैं , वह स्तुति कहाती है।

स्तुति का फल :- जिनका गुणगान करने से गुण वाले पदार्थ में प्रीति होती है ,वह स्तुति का फल कहाता है।

निन्दा :-जो मिथ्याज्ञान, मिथ्याभाषण, झूठ में आग्रहादि क्रिया का नाम निन्दा है कि जिससे गुण छोड़कर उनके स्थान में अवगुण लगाना होता हैं।

प्रार्थना :-अपने पूर्ण पुरूषार्थ के उपरान्त उत्तम-कर्मों की सिध्दि के लिये परमेश्वर वा किसी सामर्थ्य वाले मनुष्य की सहायता लेने को प्रार्थना कहते हैं।

प्रर्थना का फल :- अभिमान -नाश , आत्मा में नम्रता , गुण - ग्रहण में पुरूषार्थ और अत्यन्त प्रीति का होना, प्रार्थना का फल हैं।

उपासना :- ईश्वर ही के आनन्द -स्वरूप में अपने आत्मा को मग्न करना होता है, उसको उपासना कहते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुलसीदासजी ने कहा है –

जेहि विधि चलहि वेद प्रतिकूला ।
तेहि विधि होई धर्म निर्मूला ॥

मनु के समय से महाभारत के समय तक सनातन धर्म का स्वरूप जो दर्शाया है संक्षेपत: कतिपय श्लोको को लिखने का लोभ संवरण दूर रहा है तद्य था

सत्य ब्रूयात् प्रिंय ब्रूयान्न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
प्रियंच नानृ तम्ब्रूयादेष धर्म सनातन: ॥ मनु अ. 4

सत्य बोलना चाहिये प्रिय बोलना चाहिये और सत्य हो परन्तु अप्रिय होने से ऐसा कटु वचन किसी को नहीं कहना चाहियें एवं प्रिय होने पर भी असत्य वचन कदापि नहीं बोलना चाहियें इसी को सनातन धर्म कहते है ।

निकृत्योपचरन्वध्य एष धर्म सनातन : । भा.व.प.अ.12

श्रीकृष्ण जी कहते है छली पुरूष का वद्य करना ही सनातन धर्म है ।

दर्शच पौर्णमासंय अग्नि होत्रंच धीमत्:
चार्तुमास्यानि चैवासन् तेषु धर्म: सनातन: ।

पूर्वकाल में जो दर्श पौण मास यज्ञ व अग्नि होत्र और चातुर्मास्यादि वैदिक कर्म किया जाते थे इन्ही वैदिक कर्मो के करने का नाम सनातन धर्म है ।

अत: सब प्राणियों के हितार्थ सबसे मित्रता रखते हुए सनातन बनाम वैदिक धर्म का पालन कर परमार्थिक कल्याण प्राप्त करे ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(महा. सभापर्व 36–28) वेद वेदांगों के ज्ञाता, बल में सबसे अधिक, दान, दाक्षिण्य, शूरता, चरित्रता, नम्रता, विवेकशीलता, धैर्य आदि सभी गुण श्रीकृष्ण में प्रतिष्ठित हैं (सभापर्व 38–16) अतः श्रीकृष्ण हमारे पूज्य हैं।

नम्रता के धनी : श्रीकृष्ण

राजसूर्य यज्ञ में एक ओर श्रीकृष्ण को सबसे श्रेष्ठ एवं पूज्य घोषित किया वहीं पर श्रीकृष्ण ने यज्ञ में आये हुए विव्दानों ऋषि–मुनियों एवं ऋत्विजों के पैर धोने का कार्य अपने हाथों में लेकर अपनी नम्रता एवं सरलता का परिचय दिया।

महान संयमी (चरित्रवान) : श्रीकृष्ण

यज्ञ के समय श्रीकृष्ण जब यज्ञशाला पर उपस्थित थे उस समय श्रीकृष्ण जैसा ही कोई दूसरा व्यक्ति आपस में चर्चा करने लगा कि श्रीकृष्ण तो यहाँ हैं, यह दूसरा कृष्ण कौन आ रहा है, तब अपने पुत्र प्रद्युम्न का परिचय देते हुए श्रीकृष्ण ने कहा कि विवाह के पश्चात 12 वर्ष तक मैंने और रूकमणी ने ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए घोर तपस्या की तब उसके पश्चात् इस पुत्र को प्राप्त किया। यह मेरा पुत्र प्रद्युम्न आ रहा है (ब्रह्मचर्य महद घोर .....) ऐसा महान चरित्र श्रीकृष्ण का था।

त्यागवाद के आदर्श : श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण ने मथुरा के अत्याचारी राजा कंस को मारकर मथुरा के राज्य पर अपना अधिकार नहीं किया : अपितु उसके वास्तविक अधिकारी कंस के पिता श्री उग्रसेन को राज्य सिंहासन पर बिठाया। इसी प्रकार जरासंध को मारकर उसके यहाँ बंदी किये हुऐ राजाओं को छुड़वाया। जरासंध की राजगद्दी पर उसके पुत्र को बिठाया। कौरवों का विनाश करके युधिष्ठिर को राजा बनाया। किसी का कुछ भी हिस्सा उन्होंने नहीं लिया, इस प्रकार आदर्श त्यागवाद का परिचय दिया।

आदर्श मित्र : श्रीकृष्ण

गुरूकुल में साथ पड़ने वाले अपने बालसखा सुदामा जो कि अपने गृहस्थ जीवन में आर्थिक दृष्टि से बहुत ही पीड़ित था, यह पता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योगेश्वर श्रीकृष्ण

डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई

आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पहले देश जरासंध और कंस के अत्याचारों से पीडित था। अनेक राजाओं को जरासंध ने बंदी बना रखा था। कंस ने अपनी क्रूरता का परिचय देते हुए अपने पिता (उग्रसेन), बहन (देवकी) और उसके पति (वासुदेव) को काराग्रह में डाल रखा था। धर्मराज कहलाने वाला राजा युधिष्ठिर द्युतक्रीड़ा (जुआ खेलने) का व्यसनी था। दुर्योधन जैसे आतातायी ने अपने भाईयों (पांडवों) की राज्यसम्पदा पर षड्यंत्र पूर्वक बलात अधिकार कर रखा था। पुत्र मोह से सन्तप्त धृष्टराष्ट्र, धनुर्विद्या के निष्णात गुरु द्रोणाचार्य, वयोवृध्द भीष्म पितामाह आदि सभी दुर्योधन के अत्याचारों को मूकदर्शक बनकर देखते रहे, कोई उसे अन्याय करने से रोकने का साहस नहीं कर सका था। ऐसे भयानक समय (महाभारत काल) में कंस-जरासंध और शिशुपाल आदि के काल, धर्म के कुशन उपदेष्टा, चरित्र के धनी, नम्रता की अप्रतिम मूर्ति, आदर्श मातृ-पितृ, गुरुभक्त, राजनीति के तत्ववेत्ता, कर्मयोग के व्याख्याता, त्याग के आदर्श योगेश्वर श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। इसके जन्म दिवस को श्रीकृष्णजन्माष्टमी के रुप में पूरे देश में उत्साह से मनाया जाता है। श्रीकृष्ण के गुणों का गुणगान करके उनके आदर्शों को हम अपने जीवन में धारण करें, यही सन्देश आर्य समाज इस (जन्माष्टमी) पर्व पर देता है।

श्रीकृष्ण श्रेष्ठ एवं पूज्य

महाराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ के समय भीष्म पितामाह से पूछा कि इस समय संसार में कौन श्रेष्ठ एवं गुणों से सम्पन्न है, जिसको यज्ञ में अर्घ्य दिया जाये अर्थात् उसकी पूजा की जाए ? भीष्म ने कहा कि जैसे सब ज्योतिमालाओं में आदित्य (सूर्य) सबसे अधिक प्रकाशमान है वैसे ही उपस्थित श्रेष्ठ पुरुषों में श्रीकृष्ण तेज, वल, पराक्रम एवं गुणों में प्रकाशित है। ये ही सम्मान के पात्र है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बोध – कथा

गर्व न कीजे ।

देवताओं और दानवो का युध्द सदा चलता रहता है। एक बार की लड़ाई में देवों ने दानवों को हरा दिया। इस पर देवता अभिमान से भर गये। उन्होंने सोचा कि यह विजय हमारी ही है। ब्रह्मस्वरूप भगवान से प्रतीत हुआ कि देवताओं का अहंकार ठीक नहीं है। तेज का रूप धारण कर ब्रह्म देवताओं के सामने आए। ब्रह्म ने पूछा – तुम कौन हो ? अग्नि ने उत्तर दिया – मैं अग्नि हूँ गर्मी के रूप में सब पदार्थों को जलाने वाला। ब्रह्म ने अग्नि से एक तिनका जलाने के लिए कहा। सारी ताकत लगाकर भी अग्नि तिनका न जला सका। फिर वायु देव सामने आये। उन्हें भी अपनी शक्ति का अभिमान था कि इस पृथ्वी पर जो कुछ भी है, उसे वह उड़ा सकते है। ब्रह्मदेव ने उसे छोटे से एक तिनके को उड़ाने के लिए दिया। वायुदेव ने छोटे से तिनके को उड़ाने के लिए पूरी ताकत लगा दी, परन्तु वह उस तिनके को नहीं उड़ा सके। तब सब देवता इकट्ठे होकर अपने राजा इन्द्र देवता के समीप पहुँचे। उस तेज के समीप जब इन्द्र पहुँचा, तब वह तेजस्वरूप ब्रह्म अर्न्तध्यान हो गये। उनकी जगह प्रकट हुई उमा। इन्द्र ने पूछा देवी वह तेजस्वरूप कौन था ? देवी ने उत्तर दिया देवताओं के राजा इन्द्र, वह तेज ब्रह्म था। उसी की शक्ति से सारा जगत चल रहा है। उसी के कारण जगत की सारी उन्नत्ति और सामर्थ है। तुम देवताओं को मिली विजय तुम्हारी न होकर भगवान की थी। भगवान ही सब कुछ करता है। हम तो उसके निमित्तमात्र है। अपनी जीत और स्थिति पर कभी अभिमान न करो।

स्व. नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लगने पर श्रीकृष्ण ने उसके दारिद्रय, दुःख को दूर करके अपनी सद्मित्रता का परिचय दिया।

कर्मयोग के उपदेष्टा : श्रीकृष्ण

युध्द के मैदान में जब अर्जुन किंकर्त्तव्यविमूढ हो गया था और युध्द न करके भिक्षाटन करके जीवनयापन करने की रट लगाने लगा तब श्रीकृष्ण ने उसे कर्म करने की प्रेरणा दी, क्षात्र धर्म का उपदेश देते हुए कहा कि मनुष्य को (स्वधर्म या कर्त्तव्य की भावना) से कर्म करने में लगा रहना चाहिए (कर्मण्येवाधि.....) कर्म से विमुख मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा दी।

कुशल राजनीतिज्ञ : श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण एक महान राजनीतिज्ञ थे । अपनी सेना और स्वयं के शस्त्रहीन ये दो विभाग करके दुर्योधन एवं अर्जुन को सन्तुष्ट ही नहीं किया अपितु पक्षपात न करने का अपना परिचय भी दिया। युध्द से होने वाली हानियो को ध्यान में रखकर स्वयं पाण्डवों की ओर से दूत बनकर दुर्योधन को समझाने गये। युद्ध के समय कर्ण के रथ का पहिया फँसने के समय जब कर्ण ने अर्जुन को कहा कि निहत्थे पर शस्त्र चलाना धर्म के विरूध्द हैं तब श्रीकृष्ण ने कर्ण को याद दिलाया कि आज तुझे धर्म याद आ रहा हैं, लाक्षागृह में पाण्डवों को जलाना, द्रोपदी का अपमान करना, शस्त्रहीन अभिमन्यु पर आक्रमण करना उस समय तुम्हें धर्म याद नहीं रहा। यह सब अर्जुन को सुनाकर उससे कर्ण का वध करवाया। यह श्रीकृष्ण की राजनैतिक दूरदर्शिता का परिचायक हैं।

महर्षि दयानन्द की दृष्टि में श्रीकृष्ण

" देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम हैं। उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश्य हैं। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा।" इस प्रकार ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज श्रीकृष्ण को अपना आदर्श मानता हैं। उनके गुणों को जीवन में धारण करना ही इनकी सच्ची पूजा करना हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दान

1. श्रध्दया देयम्। (तै. शि. 11/3)
श्रध्दया से दान करना चाहिए।

2. अश्रध्दया देयम्। (तै. शि. 11/3)
अश्रध्दय से दान करना चाहिए।

3. श्रिया देयम्। (तै. शि. 11/3)
प्रसन्नता से दान करना चाहिऐ।

4. ह्रिया देयम्। (तै. शि. 11/3)
लज्जा से देना चाहिऐ।

5. भिया देयम्। (तै. शि. 11/3)
भय से देना चाहिए।

6. संविदा देयम्। (तै. शि. 11/3)
प्रेमभाव से देना चाहिए।

सत्संग

प्रति रविवार आर्य समाज, महू में सत्संग के अन्तर्गत आयोजित यज्ञ - भजन -प्रवचन में सम्मिलित होकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करें।

प्रात : 8 बजे से 9.30 बजे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हे तेजस्वरूप।

आप हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करें

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धिमहि धियो यो नः प्रचोदयात

विनय – मुझे क्या करना चाहिये क्या नहीं – यह मैं नहीं जानता। किस समय क्या कर्त्तव्य है क्या अकर्त्तव्य, क्या धर्म है क्या अधर्म – यह मैं नही जान पाता। सुना है कि बड़े – बड़े ज्ञानी भी बहुत बार इस तरह किंकर्त्तव्यविमूढ हो जाते है , परन्तु क्या इसका कोई ईलाज नहीं है ? हे सवित: देव। हमारे उत्पादक देव। क्या तुने हमें उत्पन्न करके इस अंधेरे संसार में यूँही छोड़ दिया है ? कोई निर्भ्रान्त (निश्चित) प्रकाश हमारे लिये तुमने नहीं दिया है – यह कैसे हो सकता है ? नहीं, तुम अपने अन्नत प्रकाश के साथ सदा हमारे हो। यदि हम चाहें और यत्न करें तो तुम हमें अपने प्रकाश से आप्लावित कर सकते हो। इसके लिए हम आज से ही यत्न करेंगे और तेरे उस 'भर्ग' (विशुद्ध तेज) को अपने में धारन करने लगेंगे जो वरणीय है, जिसे हर किसी को लेना चाहिये – जिसे प्रत्येक मनुष्य – जन्म पाने वाले को अपने अन्दर स्वीकार करने की आवश्यकता है। इस तेरे वरणीय शुद्धस्वरूप का हम जितना श्रवण, मनन, निदिध्यासन करेंगे अर्थात जितना तेरा कीर्त्तन सुनेगें, तेरा विचार करेंगे, तुझमें मन एकाग्र करेंगे , तेरा जप करेंगे, तुझमें अपना प्रेम समर्पित करेंगे उतना ही तेरा शुद्धस्वरूप हमारे अन्दर धारण होता जायेगा। बस, यह ऊपर से आता हुआ तुम्हारा तेज ही हमारी बुद्धि को और फिर हमारे कर्मो को ठीक दिशा में प्रेरित करता रहेगा। इस शुद्धस्वरूप के साथ तुम ही मेरे ह्दय में बस जाओंगे और तुम ही मेरी बुद्धि, मन आदि–सहित इस शरीर के संचालक हो जाओगे फिर धर्म – अधर्म की उलझन कहाँ रहेगी। तुम्हारे पवित्र संस्पर्श इस शरीर की एक–एक चेष्टा में शुद्ध धर्म की ही वर्षा होगी। इसलिए हे प्रभो। हम आज से सदा तुम्हारे शुद्ध तेज को अपने में धारन करने में लगते है। एक–एक मानसिक विचार के साथ, एक–एक जप के साथ इस तेज का अपने अन्दर आह्वान करेंगे और इस तरह प्रतिदिन इस तेज को अपने में अधिकाधिक एकत्र करते जाएँगे। निश्चय है कि इस 'भर्ग' की प्राप्ति के साथ–साथ धर्म के निश्चय में पटु होती हुई हमारी वुद्धि एक दिन तुम्हारी सर्वज्ञता के कारण पूर्ण रूप से ठीक मार्ग पर चलने वाली हो जावेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ताजा व शुद्ध मावा, शुद्ध घी
प्राप्त करने का एकमात्र विश्वसनीय स्थान --

कृष्णा उपहार गृह

हाट मैदान महू

प्रोप्रायटर ईश्वर हुकुमचन्द्र चौधरी (कैलोद वाले)

न्यू स्टार डेरी

टूर एण्ड ट्रेवल्स

गेरीसन ग्राऊण्ड के सामने, महू

100% शुद्ध

दूध, दही, घी, मक्खन, पनीर, क्रीम एवम् जॉनसन आइस्क्रि
मिलने का एकमात्र स्थान। विवाह पार्टियों के आर्डर लिये जा
प्रोप्रा. - सुनील

ऐम्बुलेंस सेवा उपलब्ध फोन : 273201

श्रीमान प्रधानजी आर्यसमाज मन्दिर
इन्दौर सिटी (मध्यप्रदेश)

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक : प्रकाश आर्य, कृते आर्य सेवा संघ, महू के लिये विश्वास प्रिंटर्स 22, खजूरी बाजार इन्दौर से मुद्रित व प्रकाशित, संपादक मंडल : आचार्य संजय देव, रामलाल शास्त्री "विद्याभास्कर" कु. निधि शर्मा, विनोद मिश्र, आर्य समाज मंदिर महू

चौधरी प्रिन्टर्स, महू फोन : 277541

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi